डिजिटल युग और गुरु नानक का साहित्य

संपादक

डॉ. स्मिता मिश्र

सह-संपादक

डॉ. अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय, डॉ. प्रकाश उप्रेती

ISBN : 978-93-88833-19-6

© सुरक्षित

प्रकाशक :

मंजुली प्रकाशन
पी-4, पिलंजी सरोजिनी नगर,
नई दिल्ली-110023

दूरभाष : 011-26114151, 011-24675237
मोबाइल : 07982270026, 09971323436
E-mail : manjuliprakashan@gmail.com

संस्करण : 2020 (प्रथम)
मूल्य : ₹ 250.00 (अजिल्द)

आवरण-सज्जा : सुमित भार्गव
आवरण डिज़ाइन : इंटरनेट से साभार
शब्द-संयोजन : नवीन शाहदरा, दिल्ली-32
मुद्रक : राजोरिया प्रिंटर्स, दिल्ली

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। संपादक- त्रय की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी
अंश के फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग
की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता। संपादक त्रय ने पुस्तक में
संकलित आलेखों में भाषिक त्रुटियों को ही संपादित किया है। आलेख कंटेंट के लिए किसी भी प्रकार से संपादक व
प्रकाशक उत्तरदायी नहीं हैं। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं।

अनुक्रम

1. अजर-अमर गुरु नानक देव
बैनीकृष्ण शर्मा ... 11

❖

2. गुरु नानक देव : चिंतन के विविध आयाम
डॉ. नागेश नाथ दास ... 21

❖

3. सत्यद्रष्टा गुरु नानक देव
डॉ. जसविंदर सिंह ... 27

❖

4. डिजिटल मिडिया और गुरु नानकदेव जी के संदेशों का प्रसार
डॉ. शोभा कौर ... 34

❖

5. गुरु नानक : 'कल और आजकल'
डॉ. मुकेश कुमार ... 45

❖

6. मल्टीमीडिया के दौर में गुरु नानक
सुनील ... 52

❖

7. गुरु नानक के भक्ति सम्बन्धी विचार
डॉ. अमरेन्द्र पाण्डेय ... 59

❖

डिजिटल मिडिया और गुरु नानकदेव जी के संदेशों का प्रसार

डॉ. शोभा कौर

गुरु नानक देव जी भारतीय के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर जनमानस के रोम रोम में समाये हुए हैं। वे भारत तथा विश्व के जिस स्थान पर गए वहाँ उन्होंने कोई न कोई संदेश दिया। विशिष्ट और सामान्य प्रत्येक स्तर के व्यक्तियों की समस्याओं का उन्होंने मनोवैज्ञानिक समाधान देते हुए व्यावहारिक उपचार भी किया। उन्होंने सामने वाले व्यक्ति के हृदय को आहत किये बिना इस प्रकार का संदेश दिया कि व्यक्ति स्वयं के आचरण को बदलने में सक्षम होने लगा।

आज 21 वीं सदी के दूसरे दशक में, जब हम डिजिटल युग में जी रहे हैं ऐसे में गुरुजी के संदेशों के प्रसार की बात करते हुए कुछ बातें सोचने पर मजबूर करती हैं। मसलन गुरु जी ने एक नॉन-डिजिटल युग में अखिल भारतीय एवं वैश्विक स्तर की अनेक यात्राएँ करते हुए अपने संदेशों द्वारा मनुष्य के हृदय और आचरण को पूर्ण-रूपेण बदल दिया, तो आज इतने डिजिटल साधनों के रहते हम उनके संदेशों का कितना प्रसार कर पा रहे हैं? क्या उनके संदेश आज भी हमारा जीवन बदल पाने में समर्थ हैं? यदि हाँ तो समाज में क्राइम रेट इतना ज्यादा क्यों हो गया है? उनके संदेशों को व्यापक स्तर पर पहुँचा पाने में हम कितने

समर्थ हुए हैं? यदि उनके संदेश सब तक पहुँच पा रहे हैं तो हमारा जीवन उच्च-स्तरीय क्यों नही हो रहा? क्या इसमें डिजिटल-मिडिया की कोई भूमिका है? यह तथ्य भी समझना होगा कि यदि एक स्तर पर गुरु नानक और डिजिटल मीडिया का एक ही लक्ष्य है- प्रश्न करो–समाधान पाओ, तो हमारा जीवन-स्तर उच्च होने के बदले निम्न स्तरीय क्यों होता जा रहा है? इन सभी प्रश्नों को समझने के सन्दर्भ में कुछ बिंदु उभर कर आते हैं–

- गुरु नानक जी के समय की समस्याएं और समाधान
- मूल्य-व्यवस्था के स्तर पर डिजिटल-मीडिया की परेशानियाँ
- साधन–व्यवस्था के स्तर पर डिजिटल मीडिया एक सशक्त विकल्प

1. गुरु नानक जी के समय की समस्याएं और समाधान : गुरु नानक देव का समाज सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सभी दृष्टियों से पतनशील हो चुका था। बाह्य आक्रान्ताओं ने तो इस समाज को बर्बाद किया ही था, आंतरिक हालात भी बहुत बिगड़ चुके थे। उस समय की अराजकतापूर्ण सामाजिक स्थितियों का एक चित्र गुरु जी की वाणी में इस प्रकार मिलता हैं–

लब पाप दुई राजा महता कूड होया सिकदार।
काम नेब सद पूछिये बहि बहि करे विचार।
अंधी रयत गियान विहूनी भाहि भरे मुरदार।

अर्थात् उस समय राजा पापी थे। उनका कोई नैतिक स्तर नहीं था और वे सभी प्रकार के कुकर्मों में लिप्त थे। मंत्री लालची थे और सम्पति एकत्रित करने में लगे रहते थे। सेनापति कायर थे, उनका अपने स्वामियों में कोई विश्वास नहीं था। न्यायाधीश भी पक्षपात करते हुए रिश्वत लेते थे। उस समय के राजा अपनी प्रजा के साथ कैसा व्यवहार करते थे, इसका बयान करते हुए गुरु जी कहते हैं :

राजा सींह मुहक्कम कुत्ते, जाए जगायन बैठे सुत्ते।
चाकर नहदा पाइनि घायो। रतु पितु कुतिहों चटी जाहु।

गुरु नानक जी का समय मुगल राज्य का स्थापनाकाल था। बाब के हमले से भारत की गरीब जनता प्रताड़ित हो रही थी। गुरुजी ने अ शब्दों में इस हालात का बयान किया है–

खुरासान खसमाना कीता हिंदुस्तान डराया
पाप की जन्झ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दान वे लालो

स्थानीय राजाओं की शानोशौकत और ऐशोआराम और आपसी फूट भी विदेशी हमलावरों के आक्रमण का प्रेरक कारण रही। हमलावर चाहे विदेशी हो या स्थानीय, दुर्दशा आम आदमी की ही होती है। गुरु नानक ऐसे निडर क्रांतिकारी साधक थे जिन्होंने एक ओर बाबर को 'जाबर' अर्थात् अत्याचारी कह कर उसे उसकी औकात याद दिलायी तो दूसरी ओर भारतीय राजाओं की भी कड़े शब्दों में खबर ली–

रतन विगाड विगोए कुत्ती, मोया सार न काई।
कलि काती राजे कसाई धरम पंख कर उड़ गिआ।
कूड अमावस्या सच चंद्रमा दिसे नाहि कहि चढ़ीआ।

अर्थात् राजा हिंसक चौधरी अहलकार (सिपाही) कुत्तों की तरह लालची थे जो जनता का खून पी रहे थे। गुरु नानक ने दलित वर्गों पर हो रहे जुल्मों, अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठायी, बुरे राजा के स्थान पर सच्चे पातशाह की स्थापना की, जिस का आधार सर्वसांझी संस्कृति को बनाया और लोगों को हलाल और हराम के सही अर्थ समझाये।

समाज और धर्म परस्पर पूरक हैं। धर्म में आये विकार समाज को नष्ट कर देते हैं, और समाज के विकार धर्म को अधर्म में बदल देते हैं। गुरु जी के समय एक तरफ कर्मकांड प्रणाली का प्रचार बढ़ रहा था दूसरी तरफ विदेशी आक्रमण से समाज की दुर्दशा हो रही थी। भारतीय संस्कृति का संतुलन बिगड़ चुका था, जिसके कारण लोग अपना मानसिक संतुलन, शील, सयंम सब गवां बैठे थे–

सरम गईआ घरि आपने पति उठी चली नालि।
नानक सच्चा एक है अवर न सच्चा ताली।

वैदिक युग का हिन्दू धर्म मध्ययुग तक अपनी वास्तविक भावना खो बैठा था। दुर्भाग्यवश हिन्दू पुरोहित वर्ग ने समाज में अपना प्रभुत्व

बना रखा था और धर्म को अन्धविश्वास और कर्मकांड युक्त बनाने में उनका बड़ा हाथ था. निरर्थक शब्दजाल के पीछे सच्ची अध्यात्मिकता समाप्त हो गई थी। उच्च ब्राह्मण वर्ग मुसलमान हाकिम वर्ग को खुश करने के लिए पाखंडी बन चुका था–

गऊ ब्राहमण कउ कर लावहु गोबर तरन न जाई।
धोती टिक्का ते जपमाली धन मलेच्छ खाई।
अंतर पूजा पढनि कतेबा संजम तुरका भाई।
छोडिले पाखंडा नाम लईए जाहि तरंदा।

हिन्दुओं का धर्म मूर्तिपूजा, व्रत रखना, तीर्थ यात्रा आदि बाह्य कर्मकांडों में संलग्न था और मुस्लिम प्रभाव के कारण भारतीय अपनी संस्कृति, अपनी जीवन-पद्धति को भूल बैठे थे। वे विदेशी शासकों को खुश करने के लिए उनके जैसा दिखने के लिए हरदम प्रयत्न करते थे।

नील वस्त्र ले कपडे पहिरै तुरक पठानि अमल किआ।

उस समय हिन्दू और इस्लाम सम्प्रदायों में भारी गिरावट आ चुकी थी। इन मतों के धर्माचार्य धर्म की उच्चावस्था के स्थान पर सारहीन कर्मकांड, थोथी रस्मों, पाखंडों, भेषों आदि में उलझे हुए थे। 'आसा दी वार' नामक वाणी में गुरु जी भारतीय समाज में फैले सभी प्रकार के पाखंडों पर प्रहार करते हुए सच को सामने लाते है :

सरम धरम दुई छपि खलोए॥
कूड़ फिरै परधान वे लालो॥

यह पंक्ति भी सभी प्रकार के पाखण्डों का खण्डन करती है–

गल माला तिलक लिलाट दुई धोती वस्त्र कपटम।
जे जाणसी ब्रह्म करम सब फोकट निस्चाऊ करमम।

धार्मिक अधोगति के कारण आम जनता का हौसला धराशायी हो चुका था।

काजि कुड बोलि मल खाई
बामन नावै जीआं घाई
जोगी जुगत न जाने अंधु
तीनों ओजाड़े के बन्धु

उपर्युक्त पंक्तियों में गुरु नानक जी ने अपने समय के प्रचलित तीन धर्माचार्यों (मुल्ला, ब्राह्मण और जोगी) की हकीकत को उघाड़ कर सामने रखा है।

लेकिन उन्होंने सभी प्रकार की सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं की आलोचना ही नहीं की अपितु उसका समाधान प्रस्तुत करते हुए 'सच' को अनिवार्य मूल्य के रूप में स्थापित किया। वेदों की तरह गुरु नानक वाणी में भी सत्य, संतोष, दया, ज्ञान, एवं क्षमा को ही धर्म के मुख्य तत्व मान लिया गया, किन्तु इनको समझ कोई 'गुरमुख' ही सकता है।

जितु कारज सत संतोख दइआ धरम है गुरमुख बुझे कोई।

(आसा म. 1, पृष्ठ 200)

जो 'असतो मा सद्गमय' भारतीय संस्कृति का मूल गुण था उसी को गुरु नानक जी ने जोर देते हुए पुनः स्थापित किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने सिखों को प्रारम्भ में ही कर्मकांड के झंझट से बचा कर 'एक नाम' और शब्द-गुरु का मार्ग दिखाया–

सबद गुर पीर गहिर गंभीरा, बिनु सबदै जगु बउराना।

इस प्रकार उन्होंने शब्द गुरु के प्राचीन ज्ञान को पुनः स्थापित कर भारतीय संस्कृति को अपनी जड़ों की ओर पुनः लौटाया। ओम ध्वनि से किस प्रकार सृष्टि का जन्म और विस्तार होता है इसका उल्लेख उनकी 'दखनी ओंकार' नामक वाणी में बखूबी मिलता है। गुरु ग्रन्थ साहिब में मानव मूल्यों का विधान केवल सैद्धांतिक स्तर पर ही नहीं है अपितु जो जिस धर्म से संबधित है उसे अपने धर्म में परिपक्व होने का संदेश है:

सो जोगी जो जुगति पछानै। गुर परसादी इको जानै॥
काजी सो जो उलटी करै। गुर परसादी जीवतु मरै॥
सो ब्राह्मणु जो ब्रह्म बिचारै। आपि तरै सगले कुल तारै॥

(गुरु ग्रन्थ साहिब, अंग 662)

भारतीय दार्शनिक विचारधारा वैश्विक स्तर पर प्रेरणा का स्रोत रही है। इसकी एक खासियत यह है कि यह पाश्चात्य दर्शन की भाँति सिर्फ तर्क-वितर्क का मुद्दा नहीं है, अपितु जीवन जीने की पद्धति है और उसमें

भी अध्यात्म सर्वोपरि है। गुरु नानकदेव के समय भारतीय समाज विभिन्न दार्शनिक वाद-विवादों में उलझा हुआ था, ऐसे में गुरु जी ने ब्रह्म, जीव, जगत, माया और परब्रह्म परमेश्वर के बारे में प्रामाणिक सत्य उजागर किया। 'सिद्ध-गोष्ठी' नामक वाणी में गुरु जी सिद्धों और योगियों से संवाद करते हुए अनुभव किये हुए सत्य की बात पर बल देते हैं और प्रचलित परम्पराओं के अन्धानुकरण को नकारते हैं। उनकी वाणी भारतीय दर्शन को उसकी वास्तविक ऊंचाईयों के दर्शन कराती है। गुरु जी ने विकृत योग-मत के स्थान पर एक नया जीवन मार्ग दिखाया। योग मत के निवृत्ति-मार्ग की अपेक्षा गुरु जी ने गुरमत के प्रवृत्ति-मार्ग में निवृत्ति का उपदेश दिया, अर्थात् "गृहस्थ में उदासी"–

क्या भाविपई सचि सूचा होई।
साच सबद बिनु मुकत न होई।

गुरु जी ने सिद्धों के साथ संवाद करके मानव जीवन संबंधी अनेक प्रश्नों का समाधान प्रस्तुत किया है। इस तरह सिद्धों की तरफ से किये प्रश्नों जैसे–जीवन का मूल क्या है? कौन सा वक्त श्रेष्ठ है? कौन सा धर्म मानने योग्य है? आदि के उत्तर में वे कहते हैं जीवन का मूल प्राण है। सतगुरु की मत लेने का वक्त सुरत को शब्द में टिकाने से मन काबू में रहता है जैसे विचार पर और बल देते हैं।

सबदु गुरु, सुरति धुनि चेला

जीवन-मुक्ति को उन्होंने एक मूल्य के रूप में स्थापित किया, जिसके लिए नाम–स्मरण ही एकमात्र साधन बताया–

जीवत मरै ता सब किछु सूझै अंतरि जानै सरब देइआ।

गुरुजी ने नाम साधना को महत्त्व दिया जिसके द्वारा पांच ज्ञानेन्द्रियों की समझ से ऊपर सूझ प्राप्त करके निज स्वरूप में जा कर परमात्मा के दर्शन होते हैं।

भारतीय सामाजिक जीवन में जाति-पाति, ऊँच-नीच और छुआछूत कोढ़ बन चुके हैं, जो वर्ण-व्यवस्था कर्म पर आधारित थी उसे निहित स्वार्थों के चलते जातिवाद के दलदल में तब्दील कर दिया गया। इसका दुष्परिणाम यह निकला कि समाज में मनुष्यता ही खतरे में पढ़ गई।

गुरु नानक जी समेत सभी सिख-गुरुओं ने इस कुप्रथा का कड़ा वि
किया और अपनी वाणी ही नहीं अपितु व्यावहारिक स्तर पर भी सफ
स्वतन्त्रता और बन्धुत्व से युक्त नव-समाज की नींव रखी जिसमें उ
"संगत और पंगत" की स्वस्थ परम्परा का सूत्रपात किया–

जानहु जोति न पूछहु जाति आगै जाति न है

गुरु नानक जी तो यहाँ तक कहते हैं कि–

नीचां अन्दर नीच जाति, नीची हूँ अति नीच।
नानक तिन के संग साथ वाडेयाँ सूं किया रीस।

लम्बे समय तक विदेशी आक्रमणों के दुष्प्रभाव के कारण भार
समाज में सती प्रथा, बाल-विवाह, अनपढ़ता कुरीतियाँ घर कर गई
समाज में स्त्री को जो प्राचीन समय में सम्मान का स्थान मिला
था वह समाप्त हो चूका था। गुरु जी के समय तक हिन्दुओं, मुसलमा
बौद्धों, जैनियों, जोगियों आदि ने स्त्रियों की निंदा की। उस समय स्त्रि
का स्थान पैर की जूती के बराबर भी न था। गुरु नानक ने पहली
मध्यकालीन साहित्य और समाज में स्त्री को बराबर का सम्मान दिय

सो क्यों मंदा अखिये जित जम्मे राजान।

गुरु नानक कालीन आर्थिक दशा बद से बदतर हो रही थी।
तरफ राजसत्ता किसानों पर भारी टैक्स लगा कर जनता का खून
रही थी, दूसरी तरफ प्राकृतिक आपदाएं जैसे अकाल, बाढ़, महामारी
प्रकोप था। ऐसे में गृहस्थ लोग घरबार त्यागे सन्यासियों का भी भरणपो
कर रहे थे। सामाजिक कुरीतियों और धार्मिक आडम्बरों एवं राजनै
लूट खसोट ने जनता की कमर तोड़ कर रख दी थी।

विकल्प के रूप में उन्होंने अपने समय की सभी समस्याओं का
संदेश दिया कि–

1. नाम जपना
2. कृत्य (काम) करना
3. बाँट कर खाना (वंड छकना) चाहिए

2. मूल्य-व्यवस्था के रूप में डिजिटल-मीडिया की परेशानि
21वीं सदी के दूसरे दशक को नव-औपनिवेशिकता का दौर भी कह

हैं। गुरु नानकदेव जी के समय से यह तीसरी गुलामी का युग है, लम्बे समय तक मुगलों और अंग्रेजों की दासता के बाद आज हम विश्व की नम्बर एक शक्ति- अमेरिका के वर्चस्व को झेल रहे हैं। यह समय और यह गुलामी इसलिए ज्यादा खतरनाक है क्योंकि आज शत्रु हमारे सामने नहीं है इसलिए हममें पराधीनता का अहसास भी नहीं है। बिना किसी प्रश्नचिह्न के हम एक अंधी-दौड़ में सम्मिलित होने को विवश हैं। हमारी सारी जरूरतें बाजारवाद तय कर रहा है, हमारी सारी जीवनचर्या एक अदृश्य रिमोट के गुलाम है। वर्तमान में हम सूचना-विस्फोट के युग में जी रहे हैं। जानकारी को ही प्रामाणिक मानने वाला हमारा युग ज्ञान से विरहित है। नॉलेज-हब के इस युग में ठहर कर चिन्तन का समय ही कहाँ है? आज समस्या यह है कि हमारे पास साधन तो बहुत हैं पर यह नहीं पता कि उनका प्रयोग कैसे करना है? स्वार्थ इतना हावी है कि जिस रास्ते पर दूसरे को बिना गिराए भी जा सकते है वहीं दूसरे को हानि पहुँचाए बिना चैन नहीं आ रहा।

गुरु नानक जी के समय समस्या के हल नहीं थे तो उन्होंने जो भी हल बताये वह लोगों ने माने, परन्तु आज डिजिटल मीडिया के पास इतने विकल्प मौजूद हैं कि व्यक्ति को समझ नहीं आ रहा कि वह कौन सा रास्ता चुने? आज सारे निदान सामने हैं पर जीवन जीने की दृष्टि नहीं विकसित हो रही है। बाजारवाद के पास मनुष्य को गुमराह करने की चाबी है। मुसीबत यह है कि आज मनुष्य स्वयं गुलाम बनने को बेकरार है।

गुरु नानक जी के संदेश कालजयी हैं क्योंकि मानवीय मूल सम्वेदनाएँ प्रत्येक समय में एक ही रहती है सिर्फ परिस्थितयों के अनुसार व्यवहार बदल जाता है। इसलिए काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ही मूलभूत समस्याएँ हैं और आज डिजिटल युग में ये प्रचंड रूप धारण कर चुकी हैं। कारण यह है कि जितनी इनकी पूर्ति की जाती है उतनी पिपासा बढ़ती जाती है। आज बाजार हमारी समस्याएँ और जरूरतें तय कर रहा है। रुक कर सोचने समझने की क्षमता को नष्ट कर रहा है, पर गुरुजी क्या कहते हैं कि-

डिजिटल-मीडिया निर्णय क्षमता को कुंठित करता है पर अगर गुरु नानक जी की जीवन दृष्टि और जीवन मूल्य हमारी चेतना में बसे हों तो हम सब के भले को ध्यान में रखते हुए निर्णय कर पाएंगे।

सूचना-विस्फोट के युग में मनुष्य को हरेक समस्या का बाहरी और इंटरेस्ट हल चाहिए जो उसे दिग्भ्रमित कर रहा है, पर गुरु जी कहते हैं कि सब कुछ भीतर है, बाहर तो भ्रम और धोखा है। आज तक मनुष्य स्वयं से कता हुआ बाहर सब-कुछ धुंध रहा है। जबकि गुरु जी कहते है कि–

सब कुछ घर माहि बाहर नाहि।
बाहर ढूंढ़े तां भरम भुलाहि।

जितने साइबर-क्राइम डिजिटल-मीडिया के युग में पाँव प्रसार चुके हैं उतने इससे पहले किसी युग में नहीं थे। वास्तव में हम डिजिटल-मीडिया के युग में मानसिक रोगी बन चुके हैं, इन साधनों पर निर्भरता हमारी शारीरिक क्षमताओं को नष्ट कर रही है।

3. साधन-व्यवस्था के रूप में डिजिटल-मीडिया एक सशक्त माध्यमः वैश्विक स्तर पर व्यक्ति को उसी के फॉर्म में बात समझानी पड़ेगी। पहले डिजिटल-मीडिया के बारे में गलत भ्रम फैला हुआ था कि इसके माध्यम से गलत जानकारी फैलायी जाती है तथा उस जानकारी की कोई प्रमाणिकता नही है। परन्तु समय के साथ आज यह मिथ टूट चूका है। आज अधिकांश जानकारी डिजिटल-मीडिया पर अपलोड हो चुकी है और उसकी विश्वसनीयता भी दिन पर दिन बढ़ रही है। आज हम डिजिटल-मीडिया के बिना जीवन की कल्पना नही कर सकते। जीवन पूरी तरह से डिजिटल जानकारी पर निर्भर हो चुका है। आज अगर हम गुरु नानकदेव जी की जीवन दृष्टि को अपनाते हुए अगर डिजिटल-मीडिया का साधन के रूप में प्रयोग करते हैं तो जीवन में संतुलन स्थापित कर सकते हैं। चूँकि आज समय और धैर्य का पूर्णतया आभाव है इसलिए यदि विभिन्न डिजिटल माध्यमों द्वारा गुरु नानकदेव जी के संदेशों को प्रसारित करते हैं तो उनकी उपयोगिता बढ़ सकती है। आज के लोगों

को जल्दी से जल्दी अपनी समस्याओं का समाधान चाहिए तो उसे फेसबुक, व्हाट्सएप, इंटरनेट, यू-ट्यूब के माध्यम से गुरूजी के संदेशों को निरंतर प्रसारित किया जा सकता है। एक स्तर पर देखा जाये तो गुरु जी और डिजिटल युग में यह साम्य है कि गुरु जी ने भी अपने समय की समस्याओं का व्यावहारिक हल बताते हुए निजी जीवन में प्रयोग पर बल दिया था. गुरु जी भी पारम्परिक मान्यताओं पर प्रश्न-चिह्न लगाते हुए उसकी व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता पर बल देते हैं। जैसे धागे के जनेऊ को पहनने का क्या मतलब, वह तो मैला हो जायेगा, टूट भी सकता है, फिर वे हल भी बताते हैं दया की कपास हो, संतोष का धागा हो, जत की गाँठ लगी हो और सत से उसे तैयार किया जाये–

दया कपाह संतोख सूत, जत गंडी सत वट।
न एह टूटे न मल लगे न एव्ह जले न जाये।
एह जनेऊ जी का हाई ता पाण्डे घत।

सबसे जरूरी यह है कि आज फेसबुक के पाँच हजार दोस्तों के बावजूद व्यक्ति अकेला और तन्हा निराश है, ऐसे में उसे गुरु नानकदेव जी से दोस्ती करनी चाहिए। उनसे ज्यादा विश्वसनीय दोस्त कोई नहीं हो सकता। वर्तमान समय की कोई ऐसी समस्या नही जिसका समाधान गुरु नानकजी के पास न हो बस हमारा उनसे सम्पर्क ही नहीं हो रहा। इस दोस्ती में डिजिटल-मीडिया माध्यम बन सकता है। "फॉर आल टाइम एंड फॉर एवर फ्रेंडशिप विद गुरु नानकदेव जी"।

इस क्षेत्र में डिजिटल-मीडिया बहुत सकारात्मक भूमिका निभा रहा है. निम्नाकिंत फेसबुक पेज और यू-ट्यूब चैनल गुरुजी के विचारों के प्रसारण में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं :

GURU NA NA K DA PA NTH NIRA LA नाम से फेसबुक पेज के 1,12,263 दर्शक हैं।

GURU GOBIND SINGH STUDY CIRCAL ने UNESCO के साथ मिलकर 550 वें प्रकाश -पर्व पाँच राज्यों के विद्यार्थियों

GURU NA NA K DEVJI 550·BIRTH A NNIVA RSA RY, Hosted by GREEN SEVA

- GURU NANAK DEV JI, you tube
- GURU NANAK DEV JI STORIES
- GURU NANAK SHAAH FAKIR, (movie)

निष्कर्षत डिजिटल-मीडिया के दौर में गुरु नानकदेव जी के संदेश की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। हमें स्वयं में उस विवेक को जाग्रत करना होगा कि अगर हमारे पास गुरु नानकदेव जी जैसे कर्मयोगी के व्यक्तित्व और कृतित्व के उदाहरण मौजूद है तो हमें इस वेबसाइट के वेब-जाल में उलझने की जरूरत नहीं। स्वयं से साक्षात्कार के गुरुजी के संदेश को ध्यान में रखते हुए बस आवश्यकता अनुसार ही इस बनावटी-बुद्धि (artificial Intelegance) का उपयोग करना है। समस्याएँ किसी भी युग की कम नहीं होती पर हमें गुरूजी का हाथ नहीं छोड़ना वरना, इस दुनिया के बाजारवाद में आइडेंटिटी लोस के चांस बहुत ज्यादा हैं. डिजिटल-मीडिया का सही उपयोग करके हम गुरूजी को अपने ज्यादा करीब महसूस कर सकते हैं। अंत में यही कहा जा सकता है कि यह यांत्रिक तकनीक एक अच्छा सेवक और बहुत बुरा मालिक है, हमारा निर्णय ही हमारा भविष्य तय करेगा क्योंकि गुरु नानकदेव जी तो ऐसे सद्‌गुरु हैं जो एक बार किसी की बाहँ पकड़ते है तो उसे कभी भव-सागर में डूबने नहीं देते वे स्पष्ट कहते हैं:

जो तऊ प्रेम खेलन का चाऊ,
सिर धर तलि गलि मोरि आऊ,
इत मारग पैर धरिजे,
सिर दीजे कानि न कीजे।

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी)
किरोड़ीमल महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Lecture Notes in Networks and Systems 106

Devendra Kumar Sharma ·
Valentina Emilia Balas · Le Hoang Son ·
Rohit Sharma · Korhan Cengiz *Editors*

Micro-Electronics and Telecommunication Engineering

Proceedings of 3rd ICMETE 2019

Springer

Springer Link

Search Log in

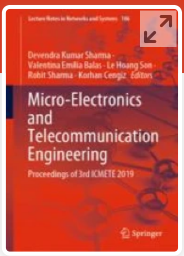

Micro-Electronics and Telecommunication Engineering pp 713–720

Easy Synthesis of Nanostructures of ZnO and ZnS for Efficient UV Photodetectors

Vipin Kumar, Ishpal Rawal & Vinod Kumar

Conference paper | First Online: 03 April 2020

597 Accesses

Part of the Lecture Notes in Networks and Systems book series (LNNS,volume 106)

Abstract

Here, we report the facial synthesis of oxide (ZnO) and sulfide (ZnS) of zinc in nanorods and nanotubular structures by simple hydrothermal reduction method. The structural and phase analysis of the prepared samples has been done through X-ray diffraction, whereas morphological investigations have been done through transmission electron microscopy studies. The optical band gaps of the synthesized materials have been examined through UV-Vis spectroscopy studies. Photoconductivity measurements have been performed of both the ZnO nanorods and ZnS nanotubes samples in UV-illumination ($\lambda \approx 365$ nm)

12. Djurisic AB, Choy WCH, Roy VAL, Leung YH, Kwong CY, Cheah KW, GunduRao TK, Chan WK, Lui HF, Surya C (2004) Photoluminescence and electron paramagnetic resonance of ZnO tetrapod structures. Adv Funct Mater 14:856–864

Author information

Authors and Affiliations

Department of Electronics and Communication Engineering, SRM-Institute of Science and Technology, Gaziabad, UP, India

Vipin Kumar & Vinod Kumar

Department of Physics, Kirori Mal College, University of Delhi, Delhi, 110007, India

Ishpal Rawal

Corresponding author

Correspondence to Vinod Kumar .

Editor information

Editors and Affiliations

Department of Electronics and Communication Engineering, SRM Institute of Science and Technology, Delhi NCR Campus, Ghaziabad, India

Dr. Devendra Kumar Sharma

Department of Automatics and Applied Software, “Aurel Vlaicu” University of Arad, Arad, Romania

DOI

https://doi.org/10.1007/978-981-15-2329-8_72

Published

03 April 2020

Publisher Name

Springer, Singapore

Print ISBN

978-981-15-2328-1

Online ISBN

978-981-15-2329-8

eBook Packages

Engineering

Engineering (R0)

Not logged in - 122.161.52.244

Not affiliated

SPRINGER NATURE

© 2022 Springer Nature Switzerland AG. Part of Springer Nature.

समकालीन हिन्दी साहित्य विमर्श

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) एस.आर.जयश्री

सहायक संपादक

डॉ. जयकुमारी के.

डॉ. गायत्री एन.

डॉ. दीपक के. आर

I.S.B.N. : 978-93-90265-20-6

पुस्तक : समकालीन हिन्दी साहित्य विमर्श

मुख्य सम्पादक : डॉ. एस. आर. जयश्री

सहायक सम्पादक : डॉ. जयकुमारी के., डॉ. गायत्री एन. एवं डॉ. दीपक के. आर.

प्रकाशक : **अमन प्रकाशन**
104A/80C रामबाग, कानपुर-208 012(उ.प्र.)
मो. : 9044344050, 8960421760
ऑफिस. 0512-3590496

संस्करण : प्रथम, सन् 2020

मूल्य : ₹ 120.00 मात्र

सर्वाधिकार : अध्ययन मण्डल

मुद्रक : आर.बी. आफॅसेट, नौबस्ता, कानपुर

शब्द सज्जा : अम्बुज ग्राफिक्स, आर.के. नगर, कानपुर

SAMKALEEN HINDI SAHITYA VIMARSH

Price : Rs. One Hundred Twenty Only

अनुक्रम

.... 7

1. विमर्श / साहित्यिक विमर्श 11

2. स्त्री विमर्श

- सिद्धांत – अवधारणा
- साहित्यिक अध्ययन

कविता 26

हॉकी खेलती लड़कियाँ – कात्यायनी

कहानी 31

कायांतर – जयश्री रॉय 44

अन्या से अनन्या तक – प्रभा खेतान 57

3. दलित विमर्श

- सिद्धांत एवं अवधारणा
- साहित्यिक अध्ययन

कहानी 66

नो बार – जयप्रकाश कर्दम 75

सलाम – ओमप्रकाश वाल्मीकी

कविता 87

सुनो ब्राह्मण – मलखान सिंह

लेख–अभिशप्त चिंतन से इतिहास चिंतन की ओर

– डॉ. धर्मवीर 91

4. आदिवासी विमर्श 108

- सिद्धांत एवं अवधारणा
- साहित्यिक अध्ययन

3. दलित विमर्श

यह सच है कि हिन्दी दलित साहित्य आधुनिक दौर में फला-फूला। लेकिन इसका संवेदनात्मक अनुगूँज प्राचीन युग से ही सुनाई पड़ता है। भारत की हड़प्पा संस्कृति में दलित संस्कृति की स्पष्ट चिन्ह दिखाई पड़ते हैं, जिसको बाद में आर्य लेखन ने अनार्यों की संस्कृति कहा जो आगे चलकर हिन्दू संस्कृत के रूप में विख्यात हो गया। मध्यकालीन भक्तिकाल में सगुण भक्त कवियों में सूरदास जैसे सवर्ण वर्ग के लोग थे जो नगरों के बीच या मंदिरों में रहते थे। वहीं दूसरी तरफ संत (निर्गुण) कवियों में चमार, रंगरेज, जुलाहे, भंगी इत्यादि समाज से बहिष्कृत लोग थे जो अपने मानवीय अधिकारों से वंचित से शोषित थे। इस संदर्भ में प्रख्यात मराठी दलित साहित्यकार शरण कुमार लिंबाले की एक कविता देखी जा सकती है :

"मस्जिद से अजान की आवाज आयी
सब मुसलमान मस्जिद चले गये
गिरजे की घंटियाँ बजीं
सब ईसाई गिरजे में चले गये
मंदिर से घंटे की आवाज आयी
आधे लोग मंदिर में चले गये
आधे बाहर ही रहे।"

यह कविता हिंदू धर्म में मौजूद घोर जातीय भेदभाव को पूरी गहराई से उठाती है। संत कवियों में स्त्रियाँ, मुसलमान, दलित, पिछड़ेपन सभी शामिल थे। अर्थात् यह सामूहिक चेतना का साहित्य था। संत कवियों की सामाजिक प्रतिक्रिया के फलस्वरूप ही निर्गुण भक्ति का सूत्रपात हुआ। आगे चलकर निर्गुण भक्ति परिवर्तनकारी सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन में तब्दील हो गयी। निर्गुण भक्त कवियों का यह सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन वास्तव में वर्ण व्यवस्था के अधीन, सामंती जाति प्रथा पर कुठाराघात था। असलियत में आदिकाल के नाथ कवियों और भक्तिकाल के कबीर, रैदास, दादू, पीपी, हीरा डोम, अछूतानन्द जैसे दलित-पिछड़े समाज के कवियों के विचार और साहित्य और डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर की प्रेरणा से आज का आधुनिक दलित साहित्य निरंतर फलीभूत हो रहा है।

जो षड्यंत्र व्यवस्था के नाम पर रचे गए, यह कविता उनके लिए एक माकूल जवाब है। ''दोहरा अभिशाप'' (आत्मकथा – कौशल्या वैसन्त्री) आत्मकथा हिन्दी दलित साहित्य की पहली महिला आत्मकथा मानी जाती है। कौशल्या वैसन्त्री अपने जीवन की एक-एक पर्त को जिस तरह उघाड़ कर पाठकों के सामने रखती हैं वह एक साहस का काम है। एक दलित स्त्री को दोहरे अभिशाप से गुजरना पड़ता है – एक उसका स्त्री होना और दूसरा दलित होना। ''शिकंजे का दर्द'' (आत्मकथा – सुशीला टाकभौरे) ने जिस तरह अपने पारिवारिक और सामाजिक संघर्षों को जिस तरह शब्दबद्ध किया है वह दलित साहित्य में विशिष्ट बन पड़ा है। एक स्त्री होने की पीड़ा और दलित जीवन की विसंगतियों को, पितृसत्ता के अधीन अपनी छटपटाहट को अभिव्यक्ति देना इस आत्मकथा की विशेषता है। ''छप्पर'' (उपन्यास – जयप्रकाश कर्दम) हिन्दी का पहला दलित उपन्यास है जिसमें 'चंदन' जैसा नायक है जो अंबेडकरवादी चेतना से लवरेज है। चंदन भी शिक्षा के लिए संघर्ष करता है और अपने समाज को संगठित करके सामंतों के जुल्म के खिलाफ लड़ता है, और सफल होता है। वस्तुतः दलित उपन्यासों में 'छप्पर' को विशेष रूप से सराहा गया है। इसमें लेखक ने ब्राह्मणवादी मानसिकता पर जोरदार प्रहार करने के साथ-साथ भारत के गाँवों में मौजूद जातिवाद तथा वर्ण व्यवस्था की बुराइयों को भी दिखाने का प्रयास किया है। ''मेरा बचपन मेरे कंधों पर'' (आत्मकथा- श्यौराज सिंह बेचैन) एक मार्मिक आत्मकथा है जिसमें बालक श्यौराज जीवन यापन हेतु मेहनत मजदूरी करते हुए, अथाह कठिन संघर्षों के बाद शिक्षा हासिल करता है। आत्मकथा में वर्णित कई ऐसे मार्मिक प्रसंग हैं जिनको पढ़ते हुए, पाठक भावुक हो उठता है।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पसरे जातिवाद के खतरनाक शिकंजों के दर्द को पूरी मार्मिकता में चित्रित करना इस आत्मकथा की विशिष्ट उपलब्धि है।

वस्तुतः ऐसी ही अनेक दलित कहानी, कविता, उपन्यास, नाटक, आत्मकथा में दलित समाज के शोषण और उत्पीड़न की प्रक्रिया को आधिक से अधिक सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना में मुख्य आधार के रूप में शामिल 'वर्ण' और 'जाति' के सवाल से जोड़ा गया है। हिन्दी दलित साहित्य की यह प्रवृत्ति ऐकांतिक नहीं सामूहिक चेतना से अथक संघर्षों से निर्मित हुई है। वास्तव में दलित साहित्य ने मानवता को पुर्नस्थापित किया है। कतिपय इसीलिए दलित साहित्य की संभावनाएँ और भविष्य संघर्षमयी हैं लेकिन सुरक्षित हैं।

डॉ. नामदेव
सह-आचार्य
किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

●